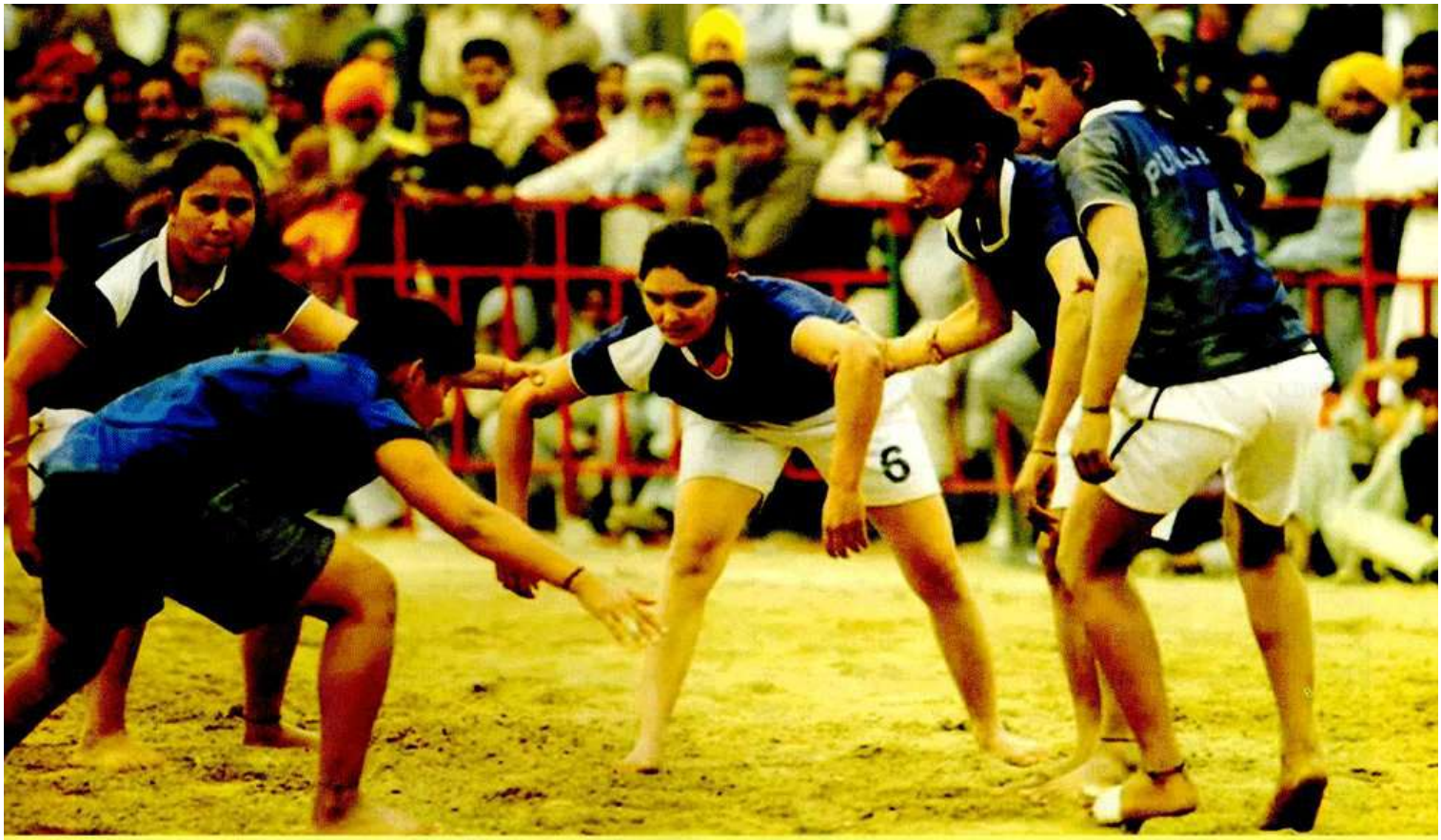

# ग्रामीण भारत में खेल प्रतिभाएँ

सत्येन्द्र पाल सिंह

**भारत के गाँव भारतीय खेलों की रीढ़ हैं। लगभग 80 प्रतिशत खिलाड़ी ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले मनु भाकर, लवलीना बोरगोहेन, साक्षी मलिक, मैरी कॉम और वंदना कटारिया जैसे खिलाड़ियों ने निशानेबाजी, मुक्केबाज़ी, कुश्ती और हॉकी में ओलम्पिक तथा अंतरराष्ट्रीय-स्तर पर देश को सफलता दिलाई है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती वैश्विक मानकों के अनुरूप आधुनिक कोचिंग और बुनियादी ढाँचे तक पहुँच की है। टार्गेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम (TOPS) और खेलो इंडिया जैसी सरकारी पहलें शीर्ष और ज़मीनी-स्तर के खिलाड़ियों को संरचित सहयोग, प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति प्रदान कर रही हैं।**

तेजी से शहरीकरण के बावजूद भारत आज भी गाँवों में ही बसता है। भारत के 80 फीसदी खिलाड़ी आज भी गाँवों से ही आते हैं, जो देश में खेलों की ताकत हैं। इसकी सबसे बड़ी मिसाल हैं, जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा। हरियाणा के पानीपत के पास स्थित खंड्रा गाँव से आने वाले नीरज भारत को जेवलिन थ्रो में वर्ष 2020 के टोक्यो ओलम्पिक में स्वर्ण, वर्ष 2024 के पेरिस ओलम्पिक में रजत पदक जिताने के साथ विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप, एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण जीत कर देश के एथलीटों की सबसे बड़ी प्रेरणा बन गए हैं। भारत ने अब तक ओलम्पिक में जो कुल दस स्वर्ण पदक जीते हैं जिनमें आठ हॉकी में और बाकी दो वैयक्तिक खेलों में निशानेबाज अभिनव बिंद्रा (बीजिंग 2008) और जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने दिलाए। संघर्ष और सीमित सुविधाओं के बावजूद गाँव से आने वाले खिलाड़ियों में कुछ कर गुज़रने की जो ललक होती है, वह महानगरों से आने वाले खिलाड़ियों में कम ही दिखती है। पेरिस ओलम्पिक में एक भी स्वर्ण न जीतने के बाद भारत ने वर्ष 2036 ओलम्पिक की मेजबानी के साथ 12 स्वर्ण सहित कुल 30-35 पदक जीतने का लक्ष्य तय किया है।

लेखक पिछले चार दशकों से खेल पत्रकारिता क्षेत्र में सक्रिय हैं। ईमेलः satyendrapalsingh0507@gmail.com

# "आज देश रिफॉर्म एक्सप्रेस पर सवार है..." – प्रधानमंत्री

4 जनवरी, 2026 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में 72वें राष्ट्रीय वॉलीबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि TOPS जैसी पहलें बुनियादी ढाँचे को सशक्त बनाकर, वित्तपोषण तंत्र में सुधार कर और युवा खिलाड़ियों को वैश्विक मंच प्रदान करके भारतीय खेलों में परिवर्तन ला रही हैं। पिछले एक दशक में भारत ने फीफा अंडर-17 विश्व कप, हॉकी विश्व कप और प्रमुख शतरंज टूर्नामेंटों सहित 20 से अधिक बड़े अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी की है। भारत वर्ष 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी के लिए तैयार है और 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी के लिए बोली लगा रहा है। राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक और खेलो भारत नीति 2025 जैसे सुधारों का उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाना तथा युवाओं को खेल और शिक्षा में एक साथ आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना है। सरकार ने खेल बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे भारत का मॉडल खिलाड़ी-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ा है, जो प्रतिभा पहचान, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, पोषण और पारदर्शी चयन पर केंद्रित है।

## ग्रामीण खेल आइकॉन

**प्रीतम सिवाच** : गुरुग्राम के पास झरसा गाँव से ताल्लुक रखने वाली प्रीतम सिवाच ने 2002 मैनचेस्टर राष्ट्रमंडल खेलों में महिला हॉकी में भारत की स्वर्ण पदक जीत में अहम भूमिका निभाई। खेल से संन्यास के बाद उन्होंने सोनीपत में प्रीतम सिवाच हॉकी अकादमी की स्थापना की, जहाँ से कई ओलंपियन खिलाड़ी तैयार हुए हैं।

**नीरज चोपड़ा** : पानीपत के पास खंडरा गाँव के एक संयुक्त किसान परिवार में जन्मे नीरज चोपड़ा ने संयोगवश भाला फेंक खेल को अपनाया। परिवार के प्रोत्साहन से उन्होंने टोक्यो ओलंपिक 2020 में 87.58 मीटर के थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा और ओलंपिक पदक जीतने वाले भारत के पहले ट्रैक-एंड-फील्ड एथलीट बने। इसके बाद उन्होंने 2023 में बुडापेस्ट में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में विश्व चैंपियन का खिताब भी जीता। पेरिस ओलंपिक 2024 में रजत पदक जीतने के बावजूद उन्होंने 89.45 मीटर का अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत थ्रो दर्ज किया। अब उनका लक्ष्य 2027 विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक 2028 है।

**मनु भाकर** : हरियाणा के झज्जर जिले के गोरिया गाँव में जन्मी 22 वर्षीय मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक 2024 में इतिहास रचते हुए 10 मीटर एयर पिस्टल (व्यक्तिगत और मिश्रित टीम) स्पर्धाओं में दो कांस्य पदक जीते। वह 2028 ओलंपिक के लिए TOPS कोर ग्रुप का हिस्सा हैं और उनके नाम कई विश्व कप तथा राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक दर्ज हैं।

**एम.सी. मैरी कॉम** : मणिपुर के कांगाथेई गाँव के एक गरीब परिवार से आने वाली मैरी कॉम ने लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीता। उन्होंने कई विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप और एशियाई खेलों में भी पदक हासिल किए। खेल जगत में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें पद्म पुरस्कारों और मेजर ध्यानचंद खेल रत्न से सम्मानित किया गया है।

**भाईचुंग भूटिया** : सिक्किम के टिंकिटाम गाँव से आने वाले भाईचुंग भूटिया ने भारत के लिए 84 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले और 27 गोल किए। "सिक्किम स्नाइपर" के नाम से प्रसिद्ध भूटिया भारत के सबसे चर्चित फुटबॉल खिलाड़ियों में से एक बने। उन्हें अर्जुन पुरस्कार और पद्म श्री से सम्मानित किया गया है।

जहाँ हॉकी, मुक्केबाजी, कुश्ती, निशानेबाजी, भारोत्तोलन और बैडमिंटन जैसे खेलों में विदेशी कोचों का वर्चस्व बढ़ रहा है, वहीं भारतीय कोचों को भी वैश्विक बदलावों के अनुरूप खुद को ढालने की आवश्यकता है। खेल संगठनों को निजी अकादमियों के साथ बेहतर तालमेल स्थापित करना होगा। भारत की खेल यात्रा स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि ग्रामीण भारत आज भी प्रतिभाओं का सबसे बड़ा भंडार है। निरंतर नीतिगत समर्थन, गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और मजबूत बुनियादी ढाँचे के साथ ये गाँव भविष्य में भी ऐसे चैंपियन तैयार करते रहेंगे जो तिरंगे को वैश्विक मंच पर गौरवान्वित करेंगे।

दरअसल, क्रिकेट और फुटबॉल को छोड़ कर आज भी किसी खिलाड़ी को आंकने का सबसे बड़ा मंच ओलम्पिक खेल ही हैं। बेशक सुनील गावस्कर, कपिल देव, सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली जैसे दुनिया में धूम मचाने वाले धुरंधर भारतीय क्रिकेटर महानगरों से हैं, लेकिन अब क्रिकेट में भी बिहार के समस्तीपुर ज़िले के छोटे से गाँव ताजपुर के 14 वर्ष के वैभव सूर्यवंशी दुनिया में अपने बल्ले से धमाल मचा कर सुर्खियों में हैं। आईपीएल की तर्ज पर ही हॉकी में हॉकी इंडिया लीग, प्रो कबड्डी लीग, खो-खो और प्रीमियर बैडमिंटन लीग हो रही हैं, जिनमें ग्रामीण प्रतिभाओं की भरमार है। भारतीय टीम में स्थान पाने से पहले इन लीगों की विभिन्न फ्रेंचाइज़ी टीमों में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ और उनके खिलाफ खेलने से उनके दिल से बड़े मंच पर खेलने का डर निकल जाता है।

क्रिकेट को छोड़ भारत में बाकी सभी खेल संस्थाएँ और खिलाड़ी ट्रेनिंग से लेकर हर चीज़ के लिए भारत सरकार और भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) पर निर्भर हैं। ओलम्पिक और पैरालम्पिक खेलों में प्रदर्शन को बेहतर करने के मकसद से युवा कार्य और खेल मंत्रालय ने सितंबर 2014 में 'टारगेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम' (टॉप्स) की शुरूआत की। अप्रैल 2018 में इसमें बदलाव किया गया ताकि टॉप्स एथलीटों के प्रबंधन और उन्हें पूरी मदद देने के लिए एक तकनीकी सहायता टीम गठित की जा सके। इस योजना के तहत ओलम्पिक और पैरालम्पिक के लिए चुने गए संभावितों को विदेशी प्रशिक्षण, अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, उपकरणों और कोचिंग शिविरों सहित सभी जरूरी मदद मुहैया कराई जा रही है। साथ ही, हर एथलीट को 50,000 रुपये का मासिक वज़ीफा भी दिया जा रहा है। 'टॉप्स' योजना भारत के शीर्ष एथलीटों को मदद मुहैया की एक कोशिश है। इस योजना का उद्देश्य इन एथलीटों की तैयारियों को और बेहतर करना है ताकि वे ओलम्पिक में पदक जीत सकें।

फिलहाल 'टॉप्स' योजना 13 खेलों और हॉकी (पुरुष एवं महिला) टीमों के 98 टॉप्स कोर ग्रुप एथलीटों और 12 खेलों के 165 टॉप्स डेवलपमेंट ग्रुप एथलीटों को मदद देती है। 'टॉप्स' के सहयोग से ग्रामीण परिवेश से आने वाले जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा और निशानेबाज मनु भाकर ओलम्पिक में पदक जीत चुके हैं। आने वाले वर्ष 2028 के लॉस एंज़िल्स ओलम्पिक में भी नीरज और मनु भाकर के साथ असम के गोलाघाट ज़िले के बरमुखिया गाँव की वर्ष 2020 टोक्यो ओलम्पिक की कांस्य पदक विजेता लवलिना बोरगोहन के भी पदक के प्रमुख दावेदार होने के चलते गत वर्ष 'टॉप्स' की संशोधित सूची के तहत मुख्य कार्यक्रम में बरकरार रखा गया है। खेलों में अपनी पहचान बनाने के बाद ग्रामीण प्रतिभाओं को सरकारी-स्तर पर ट्रेनिंग देने में भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) और नेशनल सेंटर ऑफ एक्सिलेंस (NCOE) अहम भूमिका निभा रहे हैं। साई और एनसीओई में ग्रामीण भारत से आने वाली खेल प्रतिभाओं को काबिल प्रशिक्षकों से वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण मिलता है।

खेलो इंडिया भी भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जो ज़मीनी-स्तर पर भागीदारी को बढ़ावा देकर, युवा प्रतिभाओं की पहचान कर, बुनियादी ढाँचा प्रदान करके और स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय-स्तर तक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर भारतीय खेलों के कायाकल्प में अहम भूमिका निभा रहा है। खेलो इंडिया की प्रतिभा खोज, वज़ीफों के रूप में आर्थिक मदद, खेल सुविधाओं का विकास, देसी खेलों को बढ़ावा देना और खेल के माध्यम से समग्र विकास पक्का करने में अहम भूमिका है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देशभर में विभिन्न खेलों के लिए बेहतर खेल ढाँचे का निर्माण करना भी है। इसके तहत *खेलो इंडिया यूथ गेम्स* (केआईवाईजी), *खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स* (केआईयूजी) और खेलो इंडिया विंटर गेम्स (केआईडब्ल्यूजी) को वार्षिक राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं के रूप में स्थापित किया गया। इनमें युवा क्रमशः अपने राज्यों और विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं और पदक जीतने के मकसद से उतरते हैं।

नीरज चोपड़ा के साथ चाहे वह फुटबॉलर भाईचुंग भूटिया हो, ओलम्पिक में कांस्य पदक जीतने वाली मुक्केबाज एमसी मेरीकॉम, पहलवान साक्षी मलिक, निशानेबाज मनु भाकर, वर्ष 2002 के मैनचेस्टर राष्ट्रमंडल खेल में हॉकी स्वर्ण पदक विजेता टीम की कप्तान सूरज लता और स्ट्राइकर प्रीतम सिवाच जिन्होंने नेहा गोयल, शर्मिला और निशा वारसी जैसी ओलंपियन दी हैं, सभी ने गाँव से निकल कर ही अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाई है। भारत को आज़ादी के बाद 1948, 1952 और 1956 में

लगातार तीन ओलम्पिक में हॉकी में स्वर्ण पदक जिताने वाले उधम सिंह, 1975 में अपनी कप्तानी में भारत को इकलौता हॉकी विश्व कप जिताने वाले अजित पाल सिंह, पिछले लगातार दो ओलम्पिक- टोक्यो (2020) और पेरिस (2024) में कांस्य पदक जीतने वाली पुरुष हॉकी टीम के कप्तान रहे मनप्रीत सिंह (मीठापुर, जालंधर) और हरमनप्रीत सिंह (तिम्मोवाल, अमृतसर) गाँव से ही आते हैं। जालंधर के गाँव संसारपुर को हॉकी की नर्सरी कहा जाता है। टोक्यो ओलम्पिक में ब्रिटेन से 3-4 से हार कर कांस्य पदक से चूकने वाली महिला हॉकी टीम की कप्तान रही रानी रामपाल शाहबाद मरकंडा और बेहतरीन स्ट्राइकर वंदना कटारिया हरिद्वार से सटे रोशनाबाद गाँव की हैं। वंदना ने भारत के लिए महिला हॉकी में सबसे ज़्यादा 320 अंतर्राष्ट्रीय हॉकी मैच खेले हैं और सबसे ज़्यादा 158 गोल किए हैं। टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय टीम के लिए ओलम्पिक के इतिहास में हैट्रिक जमाने वाली वह देश की पहली खिलाड़ी हैं। वहीं मेजरध्यान चंद खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार तथा पदम श्री से नवाजी गई रानी रामपाल ने भारत के लिए 254 अंतर्राष्ट्रीय हॉकी मैच खेल कर 120 गोल किए हैं। भारत के लिए पुरुष हॉकी में सबसे ज़्यादा 412 अंतर्राष्ट्रीय हॉकी मैच खेल 77 गोल करने और तीन ओलम्पिक में खेलने का गौरव ओडिशा के सुंदरगढ़ के सौउनामरा गाँव से आने वाले दिलीप तिर्की को हासिल है। दिलीप तिर्की सांसद भी रह चुके हैं।

भारत को ओलम्पिक में कुश्ती में अब तक जो कुल आठ पदक मिले, सभी गाँवों से आने वाले पहलवानों ने दिलाए। खशाबा जाधव (1952 हेलसिंकी ओलम्पिक में कांस्य), सुशील कुमार (बीजिंग 2008 में कांस्य व लंदन 2012 में रजत), रवि दहिया (2020 टोक्यो, रजत), योगेश्वर दत्त (2012 लंदन, कांस्य), बजरंग पूनिया ( 2020 टोक्यो, कांस्य), अमन सहरावत (2024 पेरिस, कांस्य) और 2016 में रियो ओलम्पिक में भारत के लिए पदक (कांस्य) जीतने वाली इकलौती महिला पहलवान हरियाणा के मोखरा गाँव की साक्षी मलिक, सभी गाँवों से ही हैं। भारत को कुश्ती में 1952 में कांस्य के रूप में पहला पदक जिताने वाले खाशाबा दादासाहेब जाधव का जन्म महाराष्ट्र के सतारा ज़िले के गोलेश्वर गाँव में हुआ था।

भारत के पास बेशक गाँवों में खेलों के लिए अपार प्रतिभा है, मगर सबसे बड़ी चुनौती इन खेल प्रतिभाओं के लिए गाँवों में बढ़िया प्रशिक्षकों की व्यवस्था करना है। भारत के पास जो घरेलू कोच हैं, उनकी सोच पुरानी है। नए ज़माने के साथ खुद को ढाले बिना और दुनिया भर में तेज़ी से होते बदलावों की जानकारी के बिना अपने विद्यार्थियों को बदलते ज़माने से कदमताल करने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता है। चाहे हॉकी हो, मुक्केबाजी, कुश्ती, निशानेबाजी, भारोत्तोलन, बैडमिंटन – सभी में ज़्यातादर कोच विदेशी इसलिए हैं क्योंकि वे खुद को अपडेट रखते हैं और हर खेलों में होने वाले बदलावों पर पैनी नज़र रखते हैं।

भारत में हर खेल में कोचिंग के लिए तब ही काबिल कोच मिलेंगे, जब मौजूदा कोच दुनिया भर में होने वाले बदलावों पर पैनी नज़र रखेंगे। भारत की जूनियर पुरुष हॉकी टीम के चीफ कोच पूर्व ओलंपियन पीआर श्रीजेश और जूनियर महिला टीम के चीफ कोच तुषार खांडकर हैं। बेशक दोनों अपने ज़माने के बेहतरीन हॉकी खिलाड़ी रहे हैं, लेकिन आज के ज़माने के चतुर अंतर्राष्ट्रीय कोच की तरह बदलावों से बहुत वाकिफ नहीं हैं। साथ ही, अलग-अलग खेल में जो निजी एकेडमी काम कर रहीं हैं, उनके साथ भी हर खेल संघ को तालमेल की ज़रूरत है। ❑